भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में काँगड़ा के क्राँतिकारी बाबा लक्ष्मणदास आर्य का योगदान

डॉ अमर सिंह पराशर
ऐसोसिएट प्रोफेसर, विभाग इतिहास राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला (हि॰प्र॰)

सारः-(Abstract) क्राँतिकारी बाबा लक्ष्मणदास आर्य काँगड़ा क्षेत्र के ही नहीं बल्कि भारत के एक क्राँतिकारी थे। उन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए क्रान्तिकारी तरीकों व अहिंसात्मक साधनों को अपनाकर अंग्रेजों को बलपूवर्क वाहर निकालने के लिए संघर्ष किया और अपना सारा जीवन भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को अर्पित कर दिया।

1.भूमिका:-

क्राँतिकारी बाबा लक्ष्मणदास आर्य काँगड़ा क्षेत्र में स्वाधीनता सँग्राम के प्रथम अमर बलिदानी थे। काँगड़ा क्षेत्र में अंग्रेजों के विरूद्ध,स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए क्राँतिकारी आन्दोलन की शुरूआत 1905 में हुई, तो उन्होंने क्राँतिकारी आन्दोलन में वढ़ चढ़ कर भाग लेना शुरू किया ।

2. साहित्य की समीक्षाः-

मैंने यह शोध शिर्षक इसलिए चुना है क्योंकि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन पर अनेक शोध कार्य किए गये हैं। परन्तु कॉगड़ा के स्वतंत्रता सेनानियों ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में जो सक्रिय कार्य किया और भारत की आजादी में अपना योगदान दिया, इस पर आज दिन तक किसी भी शोधार्थी ने गहनता से शोध नहीं किया है।

3. उद्देश्यः-

इस शोधकार्य में शोधार्थी का उद्देश्य काँगड़ा क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों तथा आम जनता की राजनीतिक गतिविधियों व कुर्वानियों को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ना हैं।

4.कार्यप्रणालीः-

इस शोधकार्य में शोधार्थी ने मौखिक तथा हस्तलिखिक दोनों प्रकार की सामग्री को प्रयोग में लाया गया है। मौखिक सामग्री शोधार्थी ने अति दुर्लभ स्थानों जाकर साक्षात्कारों के माध्यम से इक्कट्ठी की गयी है तथा लिखिक सामग्री के लिए शोधार्थी ने समस्त काँगड़ा क्षेत्र का सर्वेक्षण किया है।

5. योगदानः-

बाबा लक्ष्मणदास आर्य का जन्म 26 जून,1878 को वर्तमान हिमाचल प्रदेश के जिला ऊना में स्व॰श्री टीकमचन्द के घर हुआ। उन्होंने जिस प्रकार शिवालिक क्षेत्र में स्वतन्त्रता आन्दोलन की चिंगारी घर घर तक पहुँचाई उससे वह शिवालिक बाबा के नाम से प्रसिद्ध हुए।[1]

बाबा लक्ष्मणदास आर्य शहीद ए आज़म सरदार भगतसिंह के चाचा सरदार अजीतसिंह के सहपाठी थे। उन्होंने 1885 में जालन्धर से मैट्रिक की परीक्षा पास की। उसके पश्चात् वह ब्रिटिश शासन की पुलिस में भर्ती होकर सारज़ैन्ट बन गये। परन्तु शीघ्र ही उन्हें अँग्रेज़ों द्वारा देश के गरीबों तथा स्वतन्त्रता सेनानियों पर किए जाने वाले अत्याचारों ने आंतरिक रूप से आघात पहुँचाया। इससे उन्हें अँग्रेज़ी सरकार की नौकरी से घृणा हो गई।[2]

अक्तूबर, 1900 में बाबा लक्ष्मणदास आर्य का विवाह श्रीमती दुर्गावाई सुपुत्री स्व॰ श्री गोकुलचन्द हमीरपुर के गलोड़ निवासी से हुआ।[3]

1905 में सरदार अजीतसिंह उनसे मिलने ऊना आए तथा उन्हें अँग्रेज़ों की नौकरी छोड़ने तथा आज़ादी की लड़ाई में शामिल होने को कहा। इससे प्रभावित होकर और अपनी माता पिता की प्रेरणा से 1905 में पुलिस की नौकरी छोड़ कर अपनी पत्नी श्रीमती दुर्गावाई आर्य के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े तथा पति पत्नी ने आज़ादी की लड़ाई का काँटों भरा मार्ग अपनाया।[4]

तत्पश्चात् वह लाला लाजपतराय और महात्मा हंसराज जैसे राष्ट्रीय नेताओं से मिलने लाहौर चले गये। जहाँ उन्हें राष्ट्रप्रेम और क्राँति के लिए प्रेरित किया गया। जब वे ऊना में क्राँतिकारी गतिविधियों में संलिप्त थे तो 1908 को लाहौर जेल में 2 वर्ष कैद की सज़ा दी।[5]

जब वे 1910 में लाहौर जेल से रिहा होकर ऊना आये तो वे महात्मा हसंराज के प्रभाव से आर्य समाज के सदस्य बन गये। इसके अत्र्तगत् गौ रक्षा, हिन्दी भाषा का प्रचार, छुआछूत उन्मूलन और आर्य समाज के कार्यों से अपने इलाके में जागृति लाने का कार्य किया। 1912 में उसकी पत्नी श्रीमती दुर्गाबाई ने भी आर्य समाज में प्रवेश किया तथा आर्य महिला मण्डल का गठन किया।[6]

1919 में जब महात्मा गाँधी का आज़ादी को प्राप्त करने का उद्देश्य चरम् सीमा पर था तो ऊना में बाबा लक्ष्मणदास व उनकी पत्नी ने काँग्रेस में प्रवेश किया तो उसी समय जलियांवाले बाग के अधिनयक डा॰ सतपाल ने पंजाब का तूफानी दौरा किया। वे बाबा लक्ष्मणदास आर्य के आवास 'लक्ष्मण भवन' भी आये। वे बाबा लक्ष्मणदास जी आर्य के स्पिरवार देशभक्ति व स्वतन्त्रता प्राप्ति की धुन देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए।

1921 में बाबा लक्ष्मणदास आर्य व उसकी पत्नी ने ऊना में असहयोग आन्दोलन का नेतृत्व सम्भाला। महात्मा गान्धी के आदेश पर विदेशी कपड़ों की होली जलाई तथा स्परिवार खादी पहनने का व्रत लिया तथा खादी का प्रचार किया। पति पत्नी दोनों ने महात्मा गान्धी के द्वारा चलाये गये इस आन्दोलन का ऊना और आसपास के इलाका में प्रचार तथा प्रसार किया और काँग्रेस के कई सदस्य बनायें।[7]

मार्च, 1929 को पंजाब काँग्रेस कमेटी की वार्षिक कान्फ्रेंस के समय बाबा लक्ष्मणदास आर्य जी के सपुत्र सत्यप्रकाश ने काँग्रेस का झण्डा ऊना के जिलाधीश की कोर्ट में लहराया और नारा दिया कि:-

"हिन्दुस्तान हमारा है, क्या रखा अँग्रेजो यहाँ तुम्हारा है?"

अँग्रेज़ी डिप्टी कमीश्नर ने उन्हें 13,14 बर्ष की आयु में ही अदालत के उठने तक कैद की सज़ा दी।[8]

1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में ऊना के बाबा लक्ष्मणदास आर्य और उनके सपुत्र सत्यप्रकाश 'बागी' को गिरफ़्तार किया गया। जेल में उन पर दवाब डाला गया और काँग्रेस छोड़ने के बदले बाबा लक्ष्मणदास आर्य जी को जम्मू कश्मीर का 'पब्लिसिटी डायरेक्टर' बनाने तथा पुत्र को आई·सी·एस· में नियुक्ति दिलाने का प्रलोभन दिया गया। परन्तु उन्होंने ब्रिटिश सरकार के प्रलोभन को ठुकरा दिया। और बेड़ियाँ पहन कर लाहौर की बोस्ट्रल जेल में एक वर्ष तक यातनाएँ सहन की।

जून, 1930 में बाबा लक्ष्मणदास जी की धर्मपत्नी धैर्य व साहस के साथ ऊना में 'महिला मण्डल' की स्थापना की तथा प्रत्येक माँ से आग्रह किया कि वह अपना एक पुत्र देश की स्वाधीनता की लड़ाई के लिए प्रदान करें।[9]

1935 तक बाबा लक्ष्मणदास जी आर्य तथा उनकी पत्नी महात्मा गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम में भाग लेते थे। इस समय तक सरकारी नौकरी छोड़ने के पश्चात् उन्हें आर्थिक संकट ने आ घेरा। बच्चों की आजीविका के लिए उन्होंने ऊना में अर्जीनवीसी का कार्य प्रारम्भ किया परन्तु अँग्रेज़ों को यह सहन न हो सका। अँग्रेज़ी सरकार ने इनका अर्जीनवीसी लाईसेंस रद्द कर दिया। इस प्रकार अँग्रेज़ों द्वारा प्रताड़ित होने के बावजूद बाबा जी देशभक्ति के मार्ग से लेशमात्र भी विचलित् न हुए।[10]

दूसरे महायुद्ध के समय अँग्रेज़ स्कूल के बच्चों से 'वारफण्ड' लेते थे। बाबा लक्ष्मणदास जी आर्य के दो छोटे पुत्रों सत्यमित्र बख्शी व सत्यभूषण शास्त्री ने 'वारफण्ड' पोलिसी का विरोध किया। जिसके फलरूवरूप दोनों को स्कूल से निकाल दिया गया।[11]

ऊना के प्रमुख आन्दोलनकारी नेता बाबा लक्ष्मणदास जी आर्य के दोनों छोटे पुत्र सत्यमित्र और सत्यभूषण ने 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया जिसके फलस्वरूप सत्यमित्र बख्शी को स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़ी गतिविधियों के कारण नौ मास जेल में रखा गया तथा सत्यभूषण शास्त्री को 1945 में बन्दी बनाया गया। इस प्रकार बाबा लक्ष्मणदास जी का समस्त परिवार स्वाधीनता सँग्राम में सक्रिय था।[12]

15 अगस्त, 1947 को जब भारत आज़ाद हुआ तो बाबा जी ने अपने घर व काँग्रेस के दफ़्तर में दीपमालाएँ जलाई। इसी प्रकार उन्होंने अपना स्वस्व देश की आज़ादी के लिए न्यौच्छावर कर दिया। भारत सरकार ने आर्थिक सहायता के रूप में इन्हें हिसार में भूमि अलाट की थी वहीं पर समाज सेवा करते हुए 6 फरवरी, 1956 को बाबा लक्ष्मणदास आर्य भगवान् को प्यारे हो गये।[13]

6. निष्कर्ष:-

इस प्रकार बाबा लक्ष्मणदास जी आर्य व उनका परिवार का, भारतीय स्वतन्त्रता सँग्राम के इतिहास में योगदान, एक अपनी ही तरह का बेमिसाल उदाहरण है। उनका यह योगदान देश की आज़ादी के इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा।

7. संदर्भ सूची:-

1.हिमाचल प्रदेश सरकारः *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड प्रथम,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला,1985 पृष्ठ 32. ; *देखिये,साक्षात्कार:* सत्यामित्र वक्शी सुपुत्र वावा लक्ष्मणदास आर्य, परिशिष्ट (4) पृष्ठ 378, व *साक्षात्कार:* सत्याभूषण शास्त्री सुपुत्र वावा लक्ष्मणदास आर्य, परिशिष्ट (5) पृष्ठ 379, *Dr. Amar Singh Prashar: Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.*

2. हिमाचल प्रदेश सरकार*: स्वाधीनता का संकल्प,* भाषा एवं संस्कृति विभाग शिमला 2005 पृष्ठ 32.

3. *पंजाब केसरी:* जालन्धर,24 दिसम्बर,1985. ; *देखिये, साक्षात्कार:* सत्यामित्र वक्शी सुपुत्र वावा लक्ष्मणदास आर्य, परिशिष्ट (4) पृष्ठ 378, व *साक्षात्कार:* सत्याभूषण शास्त्री सुपुत्र वावा लक्ष्मणदास आर्य, परिशिष्ट (5) पृष्ठ 379, *Dr. Amar Singh Prashar: Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.*

4. हिमाचल प्रदेश सरकारः *स्वाधीनता का संकल्प,*भाषा एवं संस्कृति विभाग,शिमला,2005 पृष्ठ 32. *; देखिये, पंजाब केसरी:* जालन्धर, 24 दिसम्बर,1985.;*देखिये, वीर प्रताप:* जालन्धर, 28 दिसम्बर, 1985.; *देखिये,* हिमाचल प्रदेश सरकार*: हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्त, इतिहास,*भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला,1996 पृष्ठ 68.

5. हिमाचल प्रदेश सरकारः*स्वाधीनता का संकल्प,* भाषा एवं संस्कृति विभाग शिमला, 2005 पृष्ठ 32,33.; *देखिये,*हिमाचल प्रदेश सरकारः *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी,खण्ड,प्रथम,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 32.

6. हिमाचल प्रदेश सरकारः *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्त, इतिहास,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला,1996 पृष्ठ 71.

7. *पंजाब केसरी:* जालन्धर, 24 दिसम्बर,1985.; *देखिये,* हिमाचल प्रदेश सरकारः *स्वाधीनता का संकल्प,* भाषा एवं संस्कृति विभाग,शिमला, 2005 पृष्ठ 33.

8. हिमाचल प्रदेश सरकारः *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 90.

9. *पंजाब केसरी:* जालन्धर, 24 दिसम्बर,1985.; *देखिये,* हिमाचल प्रदेश सरकारः *स्वाधीनता का संकल्प,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 2005 पृष्ठ, 33,34.

10. हिमाचल प्रदेश सरकारः *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्त इतिहास,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 112,113.

11. हिमाचल प्रदेश सरकार*: स्वाधीनता का संकल्प,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 2005 पृष्ठ 34.

12. हिमाचल प्रदेश सरकार*: हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्त इतिहास,*भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 148.

13. *साक्षात्कारः* सत्यामित्र वक्शी सुपुत्र वावा लक्ष्मणदास आर्य, परिशिष्ट (4) पृष्ठ 378, व *साक्षात्कारः* सत्याभूषण शास्त्री सुपुत्र वावा लक्ष्मणदास आर्य, परिशिष्ट (5) पृष्ठ 379, *Dr. Amar Singh Prashar: Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947*.